उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद
U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH

निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ–226005

Near Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांकः153/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉकः 01–05–2025

दिनांक : 01 मई, 2025 **समय : 12:00 बजे**

स्थान : उपकार सभाकक्ष **उपस्थितिः संलग्न**

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2025–26 की तृतीय बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2025–26 की तृतीय बैठक, डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 01 मई, 2025 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक एवं पादप रोग वैज्ञानिक; आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के धान प्रजनक एवं मौसम वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ; कृषि विभाग; पशुपालन विभाग; मत्स्य विभाग; वन विभाग; उद्यान विभाग; उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, लखनऊ तथा उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में सीएफआरआई, झांसी; बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ; कृषि सांख्यिकी के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने ऑनलाइन प्रतिभाग किया। बैठक में विचार–विमर्श उपरांत मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये गयेः–

- वर्तमान सप्ताह में मेघगर्जन, वज्रपात, तेज झोकेंदार हवाओं एवं कभी–कभी ओलावृष्टि संभावना रहती है अतः मौसम विभाग द्वारा दैनिक स्तर पर जारी/अपडेट चेतावनियों का अनुसरण करें। इस सम्बन्ध में आगामी 3–4 घंटो के दौरान की मौसम चेतावनियाँ सचेत ऐप पर जारी की जाती हैं जिसे यूआरएल https://sachet.ndma.gov.in पर साथ ही सचेत ऐप डाऊनलोड कर देखा जा सकता है।
- गेहूं की कटाई यथाशीघ्र सम्पन्न करें तथा सुरक्षित भण्डारण सुनिश्चित करें। जायद की फसलों की कटाई शीघ्र ही सुनिश्चित करें अन्यथा आगामी सप्ताह में मौसम प्रतिकूल होने के कारण फसलों को नुकसान होने की संभावना है।
- जो खेत खाली हैं उन खेतों की मिट्टी पलट हल से गहरी जुताई करें जिससे मृदा में दबे/छिपे खरपतवार के बीज व कीट गर्मी से नष्ट हो जाय।
- फसल अवशेष का जीवांश कार्बन और पोषक तत्वों को मृदा में पुर्नचक्रण द्वारा मृदा की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने के लिये जैविक फॉरमुलेशन हेलो–केयर का प्रयोग करें हेलो–केयर केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान–क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ पर उपलब्ध है जहां से किसान भाई इसे प्राप्त कर सकते हैं।
- देर से बोये जाने वाले गन्ने की बुवाई यथाशीघ्र सम्पन्न कर लें व लाइन से लाइन की दूरी 60 से.मी. सुनिश्चित करें।
- धान की रोपाई किये जाने वाले प्रक्षेत्रों में हरी खाद हेतु 80–90 किग्रा. सनई अथवा 60 किग्रा. ढैंचा प्रति हे. की दर से बुवाई सुनिश्चित करें।
- धान की बुवाई हेतु शोधित बीज की ही व्यवस्था करें तथा मई माह में पौध बुवाई हेतु अधिक अवधि में पकने वाली प्रजातियों के बीज को वरीयता दें।
- आम के भुनगा कीट की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. (3.0 मिली0/10 लीटर) एवं प्रोफेनोफास 50 प्रतिशत ई.सी. (1 मिली0/लीटर) पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- आम में फल मक्खी व अन्य कीटों से बचाव हेतु एवं फलों की गुणवत्ता को बढ़ाने हेतु फ्रूट कवर बैग का प्रयोग करें।
- मृदा जनित रोगों यथा तना सड़न, जड़ सड़न, झुलसा, भूरा धब्बा, बकानी, जीवाणु झुलसा, उकठा आदि से बचाव हेतु ट्राइकोडर्मा विरिडी 1 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. अथवा ट्राइकोडर्मा हरजियेनम 2 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. की 2.5 किग्रा. प्रति हे. मात्रा 65–75 किग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छीटा देकर 8–10 दिन तक छाया में रखने के उपरान्त बुवाई के पूर्व आखिरी जुताई पर भूमि में मिला देने से शीथ ब्लाईट, मिथ्या कण्डुआ आदि रोगों से बचाव किया जा सकता है।
- पशुओं को हरे चारे जैसे ज्वार, बाजरा व चरी पर्याप्त नमी वाले खेतों की ही खिलायें। हरे चारे हेतु चारे की कटाई जड़ से 6 इंच ऊपर ही करें।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा का लाभ लेने हेतु विभाग के द्वारा उपलब्ध मोबाइल वेटनरी यूनिट के टोल फ्री हेल्पलाइन नं.–1962 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

आगामी सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (02–08 मई, 2025)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह में 04 से 06 मई के दौरान प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में मेघगर्जन, वज्रपात एवं तेज झोकेंदार हवाओं के साथ हल्की से मध्यम वर्षा जबकि इस सप्ताह के आरंभिक एवं अंतिम चरण में प्रदेश के उत्तरी भाग में कहीं–कहीं हल्की वर्षा होने की संभावना है जिसके परिणामस्वरूप औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से कम रहने की संभावना है। इसी क्रम में 01 मई को प्रदेश के उत्तरी पूर्वी मैदानी क्षेत्र में कही–कहीं ओलावृष्टि की भी संभावना है।

आगामी द्वितीय सप्ताह के मौसम का दृष्टिकोण (09–15 मई, 2025)

इस सप्ताह के आरंभिक चरण में प्रदेश के उत्तरी पूर्वी मैदानी क्षेत्र को छोड़कर अन्य कृषि जलवायु अंचलों में कहीं–कहीं हल्की वर्षा होने की संभावना है। जिसके परिणामस्वरूप औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से कम रहने की संभावना है।

जायद फसलों की खेती

- सूरजमुखी के बीज पक कर कड़े हो जाए तो मुन्डकों की कटाई कर लेनी चाहिए। मुन्डकों को काट कर साये में सूखा लें और इन्हे ढेर बनाकर नहीं रखना चाहिए।
- उर्द/मूंग की फसल में 5 से 10 पौढ़ मक्खी (सफेद मक्खी) प्रति पौध की दर से दिखाई पड़ने पर आक्सीडेमेटॉन–मिथाइल 25 प्रतिशत ई.सी. या डाइमेथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर प्रति हे. की दर से 600–800 ली. पानी मिलाकर छिड़काव करें।
- उर्द/मूंग की फसल में पीला चित्रवर्ण (मोजैक) रोग दिखाई देते ही प्रभावित पौधे सावधानीपूर्वक उखाड़ कर नष्ट (जला दे/गाड़ दें) कर दें। 5 से 10 पौढ़ मक्खी (सफेद मक्खी) प्रति पौध की दर से दिखाई पड़ने पर आक्सीडेमेटॉन–मिथाइल 25 प्रतिशत ई.सी. अथवा इमिडाक्लोप्रिड 0.5 ग्रा. प्रति ली. या डाइमेथोयेट 30 ई.सी. 1 लीटर प्रति हे. की दर से 600–800 ली. पानी मिलाकर छिड़काव करें।

मक्का की खेती

- देर से पकने वाली मक्का की बुवाई मध्यम मई से मध्य जून तक पलेवा करके करें। देर से पकने वाली (95 दिन से अधिक) किस्मों यथा; एच.क्यू.पी.एम.–4, एच.एम.एच.–3904, पी.एम.एच.–3, एच.क्यू.पी.एम.स.–5, एन.के.–61, एच.क्यू.पी.एम.–1, सीड टेक–2324 तथा बुलंद आदि की बुवाई करें।
- यदि बीज शोधित न हो तो बीज बोने से पूर्व, पहले 1 किग्रा0 बीज को 2.5 ग्रा. थीरम या 2 ग्राम कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से शोधित करना चाहिये तथा बाद में बीज को इमिडाक्लोप्रिड 2 ग्रा./किग्रा. से बीज को शोधित करें।

गन्ना की खेती

- शरदकालीन गन्ने में पर्याप्त कल्ले होने पर अवांछित कल्लों को निकलने से रोकने के लिये मिट्टी चढ़ा दें।
- पेड़ी फसल में अधिक पैदावार लेने हेतु सिंचाई, उर्वरक प्रबंधन एवं निराई गुड़ाई समय समय पर करें।
- बसंतकालीन गन्ने में सिंचाई पश्चात् 50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति एकड़ की दर से टापड्रेसिंग कर गुड़ाई करें।
- चोटीबेधक कीट के नियंत्रण हेतु ग्रसित नवजात पौधे को जमीन की सतह से काटकर नष्ट कर दें अत्यधिक प्रकोप की दशा में क्लोरेन्ट्रोनिलीप्रोल 18.5 एस.सी. के 150 मि.ली. कीटनाशक को 400 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ की दर से ड्रेचिंग कर सिंचाई करें।
- वर्तमान में गन्ने में पाइरीला कीट का प्रकोप देखा जा रहा है, इसके नियंत्रण हेतु यदि खेत में परजीवी प्राकृतिक रूप से दिख रहे हैं तो खेत में नमी बनाये रखें तथा किसी भी कीटनाशक का छिड़काव न करें। यदि परजीवी दिखाई नहीं दे रहे है तो 0.3 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- जिन किसान भाइयों ने गन्ने के साथ अन्तः फसल के रूप में दलहनी फसलों यथा मूंग, उर्द एवं लोबिया की बुआई की है। समय–समय पर सिंचाई, खरपतवार प्रबन्धन एवं कीट प्रबन्धन करते रहें।

सब्जियों की खेती

- कद्दूवर्गीय फसलों में यदि हरा फुदका कीट 10 की संख्या में प्रति हिल दिखाई दे तो फल तुड़ाई उपरान्त फसल पर इमिडाक्लोरोपिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 मिली. जबकि तना व फल छेदक कीट के

नियंत्रण के लिए फ्लुबेन्डीमाइड 39.35 प्रतिशत एस.सी. की 1.0 मिली. को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

- कद्दूवर्गीय फसलों को फल मक्खी से बचाने हेतु क्यू ल्योर फेरोमोन ट्रैप 8–10 ट्रैप प्रति हे0 की दर से लगायें।
- मिर्च में पर्णकुंचन एवं मोजैक विषाणु इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 मिली. को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 10–12 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें तथा रोग ग्रसित पौधों को उखाड़कर जला दें अथवा मिट्टी में दबा दें।
- बैंगन एवं टमाटर की फसल को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिए क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 1.0 मिली0 मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- हल्दी अदरक की बुवाई हेतु खेत की तैयारी एवं कंद की व्यवस्था करें।
- भिण्डी में पीत शिरा मोजैक भी रोकथाम के लिए प्रभावित पौधे उखाड़कर जला दें या मिट्टी में दबा दें तथा नीला चिपचिपा ट्रैप 8 से 10 ट्रैप प्रति हे0 लगायें। इसके रासायनिक उपचार में इमिडाक्लोरोपिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 मिली0 दवा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- भिण्डी की शाखा एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रैप 5 प्रति हेक्टर फसल में 6 से 12 इंच ऊपर लगायें अथवा फ्लुबेन्डीमाइड 39.35 प्रतिशत एस.सी. की 2.0 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव करें।

<u>बागवानी</u>

- वर्तमान मौसम में आम के फलों को आंतरिक ऊतक क्षय (फ्रूट निक्रोसिस) से रोकथाम हेतु बोरेक्स 6 से 8 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी के घोल बनाकर पहला पर्णीय छिड़काव करें।
- आम की फसल में लगने वाला कैटरपिलर (कटर कीट) के नियंत्रण हेतु क्लोरपाईरीफॉस 50 प्रतिशत + साइपरमैथ्रिन 5 प्रतिशत की 2 मि.ली. दवा प्रति ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- आम एवं अमरूद में फलमक्खी से बचाव हेतु मिथाइल यूजिनाल एवं क्यू ल्योर ट्रैप 8–10 ट्रैप प्रति हे0 लगाये तथा नीम एक्सट्रैक्ट 5 प्रतिशत प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- लीची में फल बेधक कीट की रोकथाम के लिए इन्डाक्साकार्ब 14.5 एस.सी. की 1.0 मिली0 अथवा फ्लुबेनडीमाइड 39.35 प्रतिशत एस.सी. की 2.0 मिली0 मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- नींबू की टहनियां यदि सूख रही हो तो 50 ग्रा. जिंक सल्फेट मोनोहाइड्रेट घोल बनाकर 10 दिनों के अंतराल पर 2 से 3 पर्णीय छिड़काव करें।
- नींबू एवं आंवला के बागों में फूल खिलने का समय है अतः सिंचाई न करें।

<u>पशुपालन</u>

- राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत पशुओं में एफ.एम.डी. एवं बी.क्यू. बीमारी का टीकाकरण कराया जा रहा है। यह सुविधा पशुचिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- पशुओं को केवल हरा चारा न खिलायें उनको 60:40 के अनुपात में सूखा एवं हरा चारा मिलाकर खिलायें।
- बदलते मौसम में पशुओं को अंतः कृमिनाशक एवं बाह्य परजीवीनाशक पशुचिकित्सक की सलाह तथा गोबर की जांच उपरांत आवश्यकता पड़ने पर उपयोग करें।
- बदलते तापमान को देखते हुये पशुओं को छायादार स्थान पर बांधे एवं पशुओं को दिन में कम से कम 2 बार पानी अवश्य पिलायें।
- राष्ट्रीय पशुधन बीमा योजना के अन्तर्गत पशुपालकों को अपने पशुओं का बीमा बीमा कंपनी द्वारा निर्धारित दर से 85 प्रतिशत छूट पर किया जा सकता है जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी से सम्पर्क कर उठा सकते है।
- जहां कहीं भी आकाशीय बिजली गिरने की संभावना हो, वहां पशुओं को खुले में न बांधे।

मत्स्य पालन

- मछली पालन हेतु तालाब बनाने के लिए उपयुक्त स्थान का चुनाव करें साथ ही पुराने तालाबों का सुधार/मरम्मत करें। नये तालाबों का निर्माण कार्य भी प्रारंभ कर दें।
- मत्स्य बीज उत्पादक ग्रास कार्प का ब्रिडिंग हैचरी में करें।
- आर्गुलस एवं कीड़ों का तालाब में संक्रमण होने पर कीड़ों को मारने हेतु ब्यूटाक्स का प्रयोग 80–100 एम. एल.प्रति एकड़ की दर से धूप रहने पर करें, जैविक एवं रासायनिक उर्वरक का प्रयोग विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार करें।
- हैचरी संचालक/मत्स्य बीज उत्पादक अच्छे अण्डों का निषेचन दर एवं स्पॉन की उत्तरजीविता के लिए प्रोटीन युक्त आहार, प्रोबायोटिक का प्रयोग मछली के आहार में करें एवं नर/मादा का पृथक्कीकरण करें।
- तालाब में जलीय कीटों, खरपतवार एवं अवांछनीय मछलियों की सफाई थोड़े–थोड़े अन्तराल पर कराते रहें।
- इस महीने में तालाब में कॉमन कार्प मत्स्य बीज का संचय करें।
- तालाब मत्स्य बीज संचय से पहले 200–600 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुझे हुए चूने का प्रयोग करें।
- प्लैंकटान नेट से नर्सरी/तालाब के पानी में प्राकृतिक भोजन की उपलब्धता की जाँच करनी चाहिए।
- तालाब में जाल चलवाकर संचित मत्स्य बीज की प्रगति एवं स्वास्थ्य की जाँच एवं उपचार समय–समय पर करते रहें।
- तालाब में पूरे वर्ष कम से कम 1.5 मीटर पानी का स्तर बना रहे ऐसी व्यवस्था करें।

वानिकी

- खैर, ऑवला, अर्जुन के बीजों की बुवाई यदि अभी तक पूर्ण न की गई हो तो अंकुरण कक्ष में तुरन्त पूर्ण कर लें। आवश्यकतानुसार पौधों की सिंचाई करें।

राज्य आपदा प्रबंधन

- राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ से प्राप्त सूचना के आधार पर वज्रपात की स्थिति में सभी विद्युत उपकरणों को बंद रखें, यात्रा कर रहें हो तो सुरक्षित स्थान देखकर रूक जाए। टिन छतों, हार्डिंग, क्षतिग्रस्त मकान, मोबाइल टावर एवं बिजली के खम्भों से दूर रहें, धातु से बनी वस्तुओं का प्रयोग न करें, पेड़ के नीचे शरण न लें, घर के बाहर जाने की अधिकारिक सूचना न मिलने तक बाहर न निकलें।
- यदि किसान भाई खेत खलिहान में काम कर रहें है और किसी सुरक्षित स्थान की शरण न ले पायें हो तो जहां हैं वहीं रहें, हो सके तो पैरों के नीचे सूखी चीजे जैसे लकड़ी, प्लास्टिक, बोरा या सूखे पत्ते रख लें तथा दोनों पैरों को आपस में सटा लें एवं दोनों हाथों से कानों को बंद कर अपने सिर को जमीन की तरफ झुका कर बन कर बैठ जाना चाहिए तथा सिर को जमीन से न सटाएं एवं जमीन पर लेटें नही। धातु से बने कृषि यंत्रों को डंडा आदि से अपने को दूर कर दें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 15 मई, 2025 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः–

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट upcar.up.gov.in पर भी उपलब्ध हैं। क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट www.kisanmitraup.ai पर भी उपलब्ध हैं। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हो तो परिषद के ईमेल upcar12@gmail.com पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

(संजय सिंह)
महानिदेशक

<u>प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।</u>

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।

39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक।
43. कृषि विभाग के सभी उप कृषि निदेशक।
44. समस्त जिला कृषि अधिकारी।
45. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
46. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
47. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
48. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
49. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
50. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

(**विनोद कुमार तिवारी**)
प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2025–26 की तृतीय बैठक दिनांक 01 मई, 2025 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
2. डा. संजीव, उप महानिदेशक, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
3. डा. विनोद कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
4. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ (ऑनलाइन)।
5. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।
6. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
7. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
8. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
9. डा. समीर कुमार विश्वास, प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
10. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम विज्ञान विभाग), आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
11. डा. आशाराम सिरवी, केन्द्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान संस्थान, झांसी।
12. श्री अशोक कुमार, सहायक कजरवेटर ऑफ फारेस्ट, वन विभाग, उत्तर प्रदेश।
13. श्री कुंदन सिंह, पादप रक्षा विभाग, कृषि विभाग, लखनऊ।
14. डा. सुनील कुमार राय, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र एवं पशुधन विकास, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
15. श्री गिरीश त्रिपाठी, सहायक निदेशक मत्स्य, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश।
16. श्रीमती प्रियंका द्विवेदी, प्रोजेक्ट एक्सपर्ट, उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, प्रथम तल पिकअप भवन, गोमती नगर, लखनऊ।
17. डा. राजेश कुमार, चारा विकास अधिकारी, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
18. डा. नेत्रपाल यादव, उद्यान विशेषज्ञ, उद्यान विभाग, लखनऊ।
19. डा. प्रिया रंजन कुमार, सह प्राध्यापक (पशु चिकित्सा स्त्री रोग), बी.एच.यू. वाराणसी (ऑनलाइन)।